पाठ 2

आप चलना सीख रहे हैं

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे

अपना हाथ परमेश्वर के हाथ में रख दीजिए
क्या शैतान ने आपको गिराने का यत्न किया है?
क्या आप मसीह के लिए दुःख सह रहे हैं?
क्या आप सन्देहों के कारण हताश और परेशान है?
आप का पिता आप से प्रेम करता है
अपने सन्देहों की व्यवस्था अभी कीजिए
पश्चात्ताप
सुसमाचार पर विश्वास कीजिये : यीशु मसीह में विश्वास कीजिये।

अपना हाथ परमेश्वर के हाथ में रख दीजिये

माता-पिता कितने ही प्रसन्न होते हैं जब उनका बच्चा चलने लगता है और कितना प्रसन्न है आपका स्वर्गीय पिता जब आप उसकी सन्तान मसीही जीवन में उसके साथ चलना प्रारम्भ करते हैं। न डरें कि आप गिर पड़ेंगे; केवल अपना हाथ उसके हाथ में रख दीजिये और वह आप की सहायता करेगा। प्रतिदिन जागते समय उससे सहायता मांगिये हर उस काम के लिए जो आप उस दिन करते हैं।

आप का काम

ठीक उत्तर के सामने √ का चिन्ह लगाइये।

1. एक मसीही होने के नाते आप का जीवन क्या है जिस की तुलना इस पाठ में की गई है?

.....अ) एक मनुष्य जो कि स्वयं चल सकता है
.....ब) एक बच्चा जो चल नहीं सकता.
.....स) आप का हाथ परमेश्वर के हाथ में रख कर चलना

उत्तर : 1. स) आप का हाथ परमेश्वर के हाथ में रख कर चलना।

क्या शैतान ने आप को गिराने का प्रयत्न किया है?

शैतान, पिशाच, परमेश्वर का और प्रत्येक मसीही का एक शत्रु

है। वह आपको ठोकर खिला कर गिराने का प्रयत्न करता है।

सम्भवत : वह सताव, उपहास, उत्साह भंग करने का कार्य, अन्यथा परीक्षा का प्रयोग कर सकता है। वह आप के मन में कि आप बच गये हैं का सन्देह उत्पन्न करने का प्रयत्न करेगा। शैतान सदैव ही मसीहियों के विरुद्ध लड़ता है और प्रयत्नशील रहता है कि उन्हें परमेश्वर से दूर कर दें। वह विशेषकर नए मसीहियों को सन्देहों और कठिनाइयों में डालकर उलझाना चाहता है। वह नहीं चाहता कि आप परमेश्वर के साथ चलना सीखें।

आप का काम

2. आप के एक मसीही बनने के पश्चात्

.....अ) आपकी सभी समस्यायें समाप्त हो गई हैं।

.....ब) शैतान आपको गिराने का प्रयत्न करेगा।

.....स) आप कभी भी निराश नहीं होंगे या सताये नहीं जायेंगे।

3. शैतान अक्सर नये मसीहियों को चाहता है

.....अ) अपने उद्धार का आनन्द उठायें।

.....ब) परमेश्वर के अस्तित्व पर सन्देह करें।

.....स) सन्देह करें कि वे बच गये हैं

उत्तर : 2. ब) शैतान आपको गिराने का प्रयत्न करेगा।
3. स) सन्देह करें कि वे बच गये हैं

यह बात स्मरण रखें कि आप का स्वर्गीय पिता शैतान से कहीं अधिक शक्तिशाली है और वह आपका हाथ थामे रखेगा

और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ और वे कभी नाश न होगी और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा। **यूहन्ना 10:28**

आप का काम

4. यूहन्ना 10:28 में यीशु के शब्दों को स्मरण कीजिये।

क्या आप मसीह के लिए दुःख सह रहे हैं?

मसीह को ग्रहण करने पर यदि आप का परिवार अथवा आप के कुछ मित्र आपका मजाक उड़ाते हैं तो इस पर आप हैरान अथवा क्रुद्ध न हों। सम्भवतः वे आप को सताव भी दें। जो हमारे लिए क्रूस पर मर गया उस के लिए (कारण) दुःख सहना हमारे लिए एक सम्मान और विशेष अधिकार की बात है। हम अपना क्रूस उठा कर उसके पीछे हो लेते हैं। उसको यह अवगत कराते हुए कि हम उन सब कष्ट और दुखों का मूल्यांकन करते हैं जो उसने हमारे लिए सहे।

इसके अतिरिक्त प्रभु उनको जो उस के लिए दुख सहते हैं प्रतिफल की प्रतिज्ञा देता है।

> यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले। **लूका 9:23**
>
> धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण

तुम्हारी निन्दा करें और सतायें और झूठ बोल-बोल कर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है। **मत्ती 5:10-12**

आप का काम

5. जब आपको मसीह के लिए दुख सहना पडे तो आपको अनुभव करना चाहिए।

.....अ) उदास और हताश
.....ब) क्रुद्ध और लड़ने को तत्पर।
.....स) प्रसन्न क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में एक बड़ा प्रतिफल रखा है।

उत्तर : 5. स) प्रसन्न क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल रखा है।

क्या आप सन्देहों के कारण हताश अथवा परेशान है?

सही काम करते समय यदि आप को कठिनाई का सामना करना पड़ता है तो हताश न हों। जब एक व्यक्ति का नया जन्म हो जाता है, तो वह वास्तव में परमेश्वर की सन्तान है, परन्तु उसे अभी चलना सीखना है।

जब एक नया मसीही कोई गलती करता है तो शैतान उसे इन विचारों से व्याकुल करने का प्रयत्न करता है "देख अब मैं ने यह गलती कर दी है। अवश्य ही मैं परमेश्वर की सन्तान नहीं अन्यथा मैं यह गलती नहीं करता।"

कुछ नये मसीही उलझन में पड़े सन्देहों को उभरने देते हैं। वे सोचते हैं : मैं एक मसीही जीवन नहीं जी सकता; यह मेरे लिये बड़ा ही मुश्किल है। मेरे लिये तो यही ठीक होगा कि मैं अपने पुराने जीवन की ओर लौट जाऊं और परमेश्वर की सेवा करने का यत्न न करूं, मैं अपने आप में उस बदलाव को नहीं देखता जिसके बारे में मसीही बात करते हैं। मैं उद्धार के आनन्द का अनुभव नहीं करता। मेरे अनुमान में मैं एक मसीही नहीं।"

क्या आप कुछ इन सन्देहों से संघर्ष कर चुके हैं? इस बात को स्मरण रखें कि यह संदेह आप के शत्रु ही से आते हैं जो कि आपको हताश करने का प्रयत्न कर रहा है एवं आप को गिराना चाहता है। कुछ लोग जब वे बच जाते हैं तो दूसरों की अपेक्षा अधिक आनन्द का अनुभव करते हैं इसलिये यह चिन्ता न करें कि आप क्या अनुभव करते हैं। जितना अधिक आप यह सीखे कि परमेश्वर ने जब आप को उसकी सन्तान बनाया तो उस समय उसने क्या किया उतना ही अधिक आनन्द आप प्राप्त करेंगे। जब आप उसकी आशीषों के लिए धन्यवाद देंगे तो आप का आनन्द बढ़ेगा। स्मरण रखें आपके उद्धार का आधार इस पर नहीं है कि आप क्या अनुभव करते हैं अथवा क्या अनुभव नहीं करते; यह तो परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर है जिसको आपने अपना जीवन और प्राण दे दिया है।

यदि आप ठोकर खाकर गिर पड़े हैं तो इसका यह तात्पर्य नहीं कि आप चलना नहीं सीख सकते या आप परमेश्वर की सन्तान नहीं है। अपनी असफलताओं के लिये उससे क्षमा मांगिये और तब खड़े हो कर और फिर से यत्न कीजिये।

आप में बदलाव आने के क्रारण आपकी परमेश्वर को प्रसन्न करने की इच्छा और यह सच्चाई कि आप अपनी असफलताओं पर चिन्तित हैं एक नये स्वभाव का प्रमाण है। इसलिये हताश न हों। स्मरण रखें कि कुछ बच्चों को चलना सीखने में दूसरों की अपेक्षा अधिक कष्ट होता है।

आप का काम

6. जब आप हताश और उदास अनुभव करें, आपको यह बात स्मरण रखनी चाहिये।

.....अ) सच्चे मसीही सदैव प्रसन्न रहते हैं।

.....ब) सभी मसीही जब वे बच जाते हैं तो एक समान आनन्द का अनुभव करते हैं।

.....स) जितना अधिक आप प्रभु का उसकी आशीषों के लिये धन्यवाद देंगे उतनी ही अधिक प्रसन्नता का आप अनुभव करेंगे।

7. आपका उद्धार इस पर आधारित है

.....अ) परमेश्वर की विश्वासयोग्यता।

.....ब) आप की भावनायें कैसी हैं।

.....स) आप कितने अच्छे हैं।

उत्तर : 6. स) जितना अधिक आप प्रभु का उसकी आशीषों के लिये धन्यवाद देंगे उतनी ही अधिक प्रसन्नता का आप अनुभव करेंगे। 7. .अ) परमेश्वर की विश्वासयोग्यता।

आप का पिता आप से प्रेम करते है

क्या आप सोचते हैं कि प्यार करने वाले माता-पिता अपने बच्चों को उनके गिरने पर पीटेंगे, या उन्हें छोड़ कर चले जायेंगे जब कि ऐसा करने से तो अपने-आप ही को चोट लगती है? बिल्कुल नही! वे उसे उठा लेंगे और उसे सांत्वना देंगे और तब उस समय तक निरन्तर प्रयत्न करते रहने के लिये जब तक कि वह चलना सीख न ले उसे उत्साह देंगे। क्या आप सोचते हैं कि परमेश्वर अपने बच्चे के लिये जो अभी चलना सीख रहा है किसी रीति से काम करेगा? असम्भव! अब प्रार्थना में उस की ओर देख कर उसे बता दीजिये "हे पिता आप का धन्यवाद हो मेरे हाथ को थामने के लिये और मुझे चलना सिखाने के लिये। मैं दुर्बल हूं परन्तु मैं यह जानता हूं कि आप मेरी जो कुछ मुझे करना चाहिये करने में सहायता करेंगे।"

आप को यह ज्ञात होना चाहिये कि परमेश्वर आप का मसीही जीवन में पवित्र आत्मा और उसके वचन पवित्र बाईबल के द्वारा मार्गदर्शन करता है। प्रतिदिन बाईबल पढ़ें और प्रार्थना करें। इस से आप की सन्देहों से छुटकारा पाने में सहायता होगी और तब आप बिना ठोकर खाए चल सकेंगे।

आप का काम

8. यदि आपने ठोकर खाई है और कुछ ऐसा किया है जो कि आपको नहीं करना चाहिए था, तो आप अपने स्वर्गीय पिता से यह आशा रख सकते हैं।

.....अ) क्रुद्ध हो और आपको उसके घर से निकाल फेंके।

.....ब) आपको क्षमा करे और ठीक काम करने में आपकी सहायता करे।

.....स) आपको अकेला छोड़ दे।

9. परमेश्वर का आत्मा आपका मार्गदर्शन करेगा और आपको दिखाएगा कि आप क्या करें जैसा कि आप।

.....अ) प्रतिदिन बाईबल पढ़ें और प्रार्थना करें।

.....ब) सितारों में अपनी जन्म पत्री निकाल कर देखें।

.....स) आपके मित्र क्या कहते हैं सुनें।

उत्तर : 8. ब) आपको क्षमा करे और ठीक काम करने में आपकी सहायता करे। 9. अ) प्रतिदिन बाईबल पढ़ें और प्रार्थना करें।

अपने संदेहों की व्यवस्था

सम्भवतः आप सोच में पड़े हों कि क्या आपने वह सब जिसकी परमेश्वर आपसे आशा करता है आपके उद्धार पाने में, किया है कि नहीं। मसीह हमें स्पष्ट बतलाता है वह भाग जो कि मनुष्य को उद्धार प्राप्ति के निमित पूरा करना है इसलिये आइये देखें कि क्या आपने अपना हिस्सा पूरा किया है कि नहीं। यदि आपको अभी तक कुछ करना शेष है तो उसे अभी कर डालें और आपके उद्धार की प्राप्ति के विषय में निश्चत करें।

परमेश्वर आपको बचने के लिए दो बातें करने को कहता है, अपने पापों से पश्चात्ताप करें और सुसमाचार पर विश्वास करें।

आप का काम

10. परमेश्वर आपको बचने के निमित्त करने के लिए कहता है वह है

.....अ) अपने पापों से पश्चात्ताप करें और सुसमाचार पर विश्वास करें।

.....ब) पश्चात्ताप करें और चर्च का सदस्य बनें।

.....स) इतने अधिक अच्छे काम करें कि पापों की अपेक्षा उनका पलड़ा भारी हो जाए।

उत्तर : 10. अ) अपने पापों से पश्चात्ताप करें और सुसमाचार पर विश्वास करें।

पश्चात्ताप

पश्चात्ताप का तात्पर्य है पापों से दुखी होना और उनसे मुख मोड़ लेना।

मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो **मरकुस 1:15**

परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने से क्या आपको दुख है ? आपके जीवन के पापों से छुटकारा पाने में क्या आपको दृढ़ संकल्पी

है, अथवा कोई ऐसा पाप है जिसे आप रखे रहना चाहते हैं? क्या आप अपने मार्ग को छोड़ने को तैयार हैं और अब से केवल वही करने को तैयार हैं जो परमेश्वर को भाता हो?

आप का काम

11. मरकुस 11:15 में यीशु के शब्दों को स्मरण करें।
12. पश्चात्ताप का अर्थ है

.....अ) अपने पापों से दुखी होना और उनसे मुख मोड़ लेना।

.....ब) पादरी के सामने अपने सभी पापों को अंगीकार कर लें।

.....स) क्षमा मांगे तब फिर से वही सब कुछ करते रहें।

उत्तर : 12. अ) अपने पापों से दुखी होना और उनसे मुख मोड़ लेना।

क्या किसी व्यक्ति ने आपके साथ ऐसा दुर्व्यवहार किया है कि आप उसे क्षमा करना नहीं चाहते? घृणा और ईर्ष्या इतने भयानक पाप हैं कि वे बहुत से लोगों को स्वर्ग से वंचित कर देते हैं। परमेश्वर प्रेम है और वह उस हृदय में जिसमें घृणा और पक्षपात भरे हुए हों नहीं रह सकता। यदि आपके मन में किसी के विरुध कोई बात है तो उसे अभी क्षमा कर दें। परमेश्वर से उनके प्रति प्रेम करने के लिए सहायता मांगे जिन्होंने आप से दुर्व्यहार किया है।

परन्तु यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा। **मत्ती 6 : 15**

यदि आप अभी तक सन्देह में पड़े हैं कि क्या आपने सचमुच में पश्चाताप किया है कि नहीं तो आप इस बात की व्यवस्था तुरन्त अपने सभी पापों से मुड़ने और अपने मार्ग को छोड़ने से कर सकते हैं ताकि अबसे परमेश्वर आपके जीवन में अपना मार्ग लागू कर सकें।

आप का काम

13. यदि किसी व्यक्ति ने आपके विरुद्ध कुछ किया है तो आप को चाहिए।

.....अ) मालूम न होने दें आप उससे कितनी घृणा करते हैं।

.....ब) तुरन्त उसे क्षमा करें।

.....स) प्रत्येक व्यक्ति को बतलायें कितना बुरा है वह।

उत्तर : ब) तुरन्त उसे क्षमा करें।

सुसमाचार पर विश्वास कीजिए : यीशु मसीह पर विश्वास कीजिए

शब्द सुसमाचार का अर्थ है शुभ समाचार। इसका अर्थ है यीशु मसीह में उद्धार के बारे में शुभ समाचार।

निम्नलिखित सुसमाचार शिक्षायें बाईबल में पाई जाती है। जिनमें आप विश्वास करते हैं उनके आगे हां लिख दीजिए।

● परमेश्वर ने आप से इतना प्रेम किया कि उसने अपने पुत्र यीशु को आपके पापों का दण्ड भुगतने के लिए भेज दिया।.....

● यीशु आप के पापों के निमित्त मर गया। यदि आप उसे अपने उद्धारकर्ता और प्रभु अंगीकार कर लें (मान ले) तो वह आप को उन से मुक्त करेगा।.....

● यीशु मुर्दों में से जी उठा और वापिस स्वर्ग को चला गया। वह आप के लिये प्रार्थना करता है और आप के लिये एक घर तैयार कर रहा है।.....

● जब आप यीशु को अपना उद्धारकर्ता, स्वीकार करते हैं तो आप परमेश्वर की सन्तान बन जाते हैं और उस में एक नया जीवन प्राप्त करते हैं।.....

● यीशु अपनों के लिये लौट आयेगा और उन्हें अपने साथ स्वर्ग में अनन्त घर में ले जाएगा।.....

क्या आप यह सब कुछ यीशु मसीह के बारे में विश्वास करते हैं ?.....क्या आप ने उसे निजी उद्धारकर्ता स्वीकार किया है?.....तब उस पर भरोसा रखिए। उस की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास कीजिये।

"उन्होंने कहा, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू उद्धार पाएगा।" **प्रेरितों के काम 16 :31**

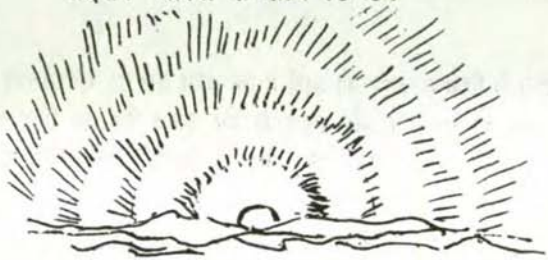

परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है: और यह जीवन उस के पुत्र पुत्र में है। जिस के पास पुत्र है, उस के पास जीवन है; और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उस के पास जीवन भी नहीं है।

1 यूहन्ना 5 : 11, 12

आप का काम

14. सुसमाचार का अर्थ है

.....अ) यीशु मसीह में उद्धार के बारे में शुभ समाचार।

.....ब) प्रचार करना।

.....स) चर्च का सिद्धान्त।

15. प्रेरितों के केाम 16 : 31 और 1 यूहन्ना 5 : 11, 12 को स्मरण कीजिये।

उत्तर : 14. अ) यीशु मसीह में उद्धार के बारे में शुभ समाचार।

यीशु में विश्वास करने का अर्थ है कि आप उस पर भरोसा रखें। वह आप को समझता और आप से प्रेम करता है। वह पिता से आप के लिये प्रार्थना करता है। यीशु है जिसको परमेश्वर ने इस काम को करने के लिये चुना है।

क्योंकि परमेश्वर एक ही है : और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच

में भी एक ही बिचवई है अर्थात् यीशु मसीह जो मनुष्य है। **1 तिमुथियुस 2:5**

और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें। **प्रेरितों के काम 4:12**

यीशु ने कहा : "मार्ग मैं हूं।" परमेश्वर तक पहुंचने के लिये कोई और सड़क अथवा मार्ग नहीं है। एक ही समय आप दो सड़कों पर नहीं चल सकते। आप को यीशु मसीह जो कि एकमात्र सच्चा मार्ग है पीछे चलने के लिये शेष सभी उन मार्गों को जिनके बारे में सोचा जाता है कि परमेश्वर के पास पहुंचाते है छोडना होगा। आप को अपना पूरा विश्वास उसी में रखना होगा।

यदि आपने वास्तव में पश्चाताप किया है, परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करते हुए और मसीह में आपना एकमात्र उद्धारकर्ता करके भरोसा रखा है तो आप बच गए हैं।

आप का काम

16. बाईबल हमें यह सिखलाती है कि

.....अ) यीशु परमेश्वर के पास पहुंचने का एकमात्र मार्ग है।

.....ब) परमेश्वर तक पहुंचने के लिये बहुत से मार्ग है।

उत्तर : 16 अ) यीशु परमेश्वर के पास पहुंचने का त्र एकमात्र मार्ग है।

क्या आप यह निश्चित करना चाहते हैं कि यीशु आप का उद्धारकर्ता है? क्या आप अपना जीवन परमेश्वर को पुनः पूर्ण अर्पित करना चाहते हैं और यह निश्चत करना चाहते हैं कि आप उसके साथ-साथ चल रहे हैं? इस प्रार्थना के इन शब्दों में उसे यह बता दीजिये।

प्रार्थना

हे परमेश्वर आप का मेरे प्रति प्रेम के लिये और आप ने अपने बेटे यीशु को मेरे बदले में मरने के लिये भेजा इसके लिये आप का धन्यवाद हो। मैं उसे अपना उद्धारकर्ता और स्वामी ग्रहण करता हूं। मेरे पापों को क्षमा करने और मुझे अपनी सन्तान करके स्वीकार करने के लिये धन्यवाद हो। मुझे अच्छा और आज्ञाकारी बनने में एवं प्रत्येक बात में आप को प्रसन्न कर सकने में मेरी सहायता करें। मैं स्वयं को आपके प्रति अर्पित करता हूं। मेरे शेष जीवन में आप के साथ चलने में आप मेरी सहायता करें। आमीन।